अध्ययन सामग्री

विषय- हिन्दी

सेमेस्टर- प्रथम(1) स्नातकोत्तर

प्रश्न पत्र- प्रथम(01)

हिंदी की बोलियाँ, वर्गीकरण तथा क्षेत्र

पदनाम- डॉ स्मिता जैन

एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

एच डी जैन कॉलेज, आरा

22:3

Scanned with CamScanner

# हिन्दी की बोलियाँ, वर्गीकरण तथा क्षेत्र

हिन्दी भाषा का क्षेत्र विशाल प्रदेश, पंजाब के कुछ भाग, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा बिहार में है, जिसमें हिन्दी भाषी प्रदेश कहते हैं। इस क्षेत्र में हिन्दी के पाँच बोली वर्ग या उपभाषाएँ हैं, जिसके अन्तर्गत 17 बोलियाँ हैं। हिन्दी की पाँच उपभाषाएँ हैं।

भाषा ↓ हिन्दी

| उपभाषाएँ (अथवा बोली वर्ग) | बोलियाँ |
| --- | --- |
| (1) पश्चिमी हिन्दी | (1) खड़ी बोली (कौरवी)<br>(2) ब्रजभाषा<br>(3) हरियाणवी या बांगरू<br>(4) बुन्देली<br>(5) कन्नौजी |
| (2) पूर्वी हिन्दी | (1) अवधी<br>(2) बघेली<br>(3) छत्तीसगढ़ी |
| (3) राजस्थानी हिन्दी | (1) पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी)<br>(2) पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी)<br>(3) उत्तरी राजस्थानी (मेवाती)<br>(4) दक्षिणी राजस्थानी (मालवी) |
| (4) पहाड़ी हिन्दी | (1) पश्चिमी पहाड़ी<br>(2) मध्यवर्ती पहाड़ी (कुमाऊँनी, गढ़वाली |

Scanned with CamScanner

(5) बिहारी हिन्दी – (1) भोजपुरी
(2) मगही
(3) मैथिली

① खड़ी बोली –

खड़ी बोली पश्चिमी रुहेलखण्ड, उत्तरी दोआब तथा अम्बाला जिले की बोली है। दिल्ली के उत्तर-पूर्व से लेकर हिमालय की तराई तक फैले भू-भाग में यह बोली जाती है। इसके अन्तर्गत रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून, अम्बाला तथा पटियाला क्षेत्र आते हैं। इस बोली के बोलनेवालों की संख्या लगभग 1 करोड़ है।

② ब्रजभाषा –

यह विशुद्ध रूप में मथुरा, आगरा, अलीगढ़ तथा धौलपुर में बोली जाती है। दक्षिण में यह आगरा, भरतपुर, करौली, धौलपुर तथा जयपुर के पूर्वी भाग में बोली जाती है, जिसमें ग्वालियर (म.प्र.) का पश्चिमी भाग भी शामिल है। इसके बोलनेवालों की संख्या अनुमानतः 1 करोड़ पच्चीस लाख है।

③ हरियाणी या बाँगरू –

'बाँगरू' का अर्थ है 'ऊँचा भू'...

"उच्च भूमि"। [illegible], [illegible], [illegible] हिसार तथा जिंद के आसपास के हरियाणा प्रान्त की बोली 'हरियाणी' कहलाती है। इसके भाषी मुख्यतः जाट हैं, इसलिए इसे जाटू भी कहते हैं। बाँगड़ प्रदेश की भाषा होने के कारण इसे बाँगरू भी कहते हैं। वास्तव में यह पंजाबी तथा राजस्थानी मिश्रित खड़ी बोली है। इसके बोलनेवालों की संख्या लगभग — 32 लाख है।

बाँगरू उपभाषा की पश्चिमी सीमा पर सरस्वती नदी बहती है। हिन्दी भाषी प्रदेश के प्रसिद्ध युद्ध क्षेत्र पानीपत तथा कुरुक्षेत्र, इसी बोली की सीमा के अन्तर्गत पड़ते हैं, अतः इसे हिन्दी की सरहदी बोली बोलना भी अनुचित नहीं होगा।

(4) कन्नौजी —

कन्नौजी बोली का क्षेत्र अवधी और ब्रजभाषा के मध्य में पड़ता है। कन्नौजी को पुराने कन्नौज राज्य की उपभाषा ही समझनी चाहिए। कन्नौजी का केन्द्र फर्रुखाबाद है, किन्तु उत्तर में यह हरदोई, शाहजहाँपुर तथा पीलीभीत तक तथा दक्षिण में इटावा तथा कानपुर के पश्चिमी भाग में बोली जाती है। इसे बोलनेवालों की संख्या 45 लाख है।

इस क्षेत्र के कवि हैं — चिन्तामणि, भूषण, मतिराम, नीलकण्ठ (लेकिन उनकी भाषा ब्रजभाषा थी)

(८) बुन्देली —

बुन्देल प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा को बुन्देली कहा गया है। यह झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भिंड, मुरैना, भोपाल, ओरछा, सागर, नरसिंहपुर, सिवनी तथा हुशंगाबाद में बोली जाती है। बोलने वालों की संख्या लगभग 89 लाख है।

पूर्वी-हिन्दी — पूर्वी हिन्दी प्रायः देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और छपाई में नागरी का प्रयोग होता है। लिखने में कभी-कभी कैथी लिपि का प्रयोग होता है।

(1) अवधी —

इसका नाम कोसली भी है। हरदोई के अतिरिक्त शेष अवध की बोली अवधी है। लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, खीरी, फैजाबाद, गोंडा, बहराइच, सुलतानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी की यह मुख्य बोली है साथ ही इलाहाबाद, फतेहपुर, कानपुर और मिर्जापुर में तथा जौनपुर के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। अवधी बोलनेवालों की संख्या 1 करोड़ 42 लाख है।

(2) बघेली —

अवधी के दक्षिण में बघेली का क्षेत्र है। इसका केन्द्र रीवां राज्य है किन्तु यह मध्यप्रान्त के दमोह, जबलपुर, मंडला तथा बालाघाट के जिलों तक फैली हुई है। बघेली बोलनेवालों की संख्या 46 लाख है।

Scanned with CamScanner

## (3) छत्तीसगढ़ी —

'छत्तीसगढ़ी' को 'लरिया' या 'खल्लाही' भी कहते हैं। यह मध्यप्रांत के रायपुर और बिलासपुर के जिलों तथा कांकेर, नंदगाँव, खैरागढ़, रायगढ़, कोरिया, सरगुजा, बस्तर तथा जयपुर आदि राज्यों में भिन्न-भिन्न रूपों में बोली जाती है। छत्तीसगढ़ी बोलने वालों की संख्या 33 लाख है जो डेनमार्क की जनसंख्या के बिल्कुल बराबर है।

---

## राजस्थानी हिन्दी —

पंजाबी के दक्षिण में राजस्थानी का क्षेत्र है। अपभ्रंश के तीन प्रमुख रूपों — नागर, उपनागर और ब्राचड़ में से सबसे प्रमुख ब्राचड़ थी। नागर अपभ्रंश का आधार शौरसेनी प्राकृत है। इसी नागर अथवा शौरसेनी अपभ्रंश से राजस्थानी विकसित हुई है। साहित्य में इसे ही डिंगल के नाम से जानते हैं। राजस्थानी राजस्थान की भाषा और हिन्दी की उपभाषा है।

## (1) पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) —

राजस्थानी का यह रूप पश्चिमी राजस्थान अर्थात् जोधपुर, अजमेर, मेवाड़, सिरोही, जैसलमेर, बीकानेर आदि में बोला जाता है। मीराबाई के पद इसी में लिखे गये हैं।

(2) उत्तरी राजस्थानी (मेवाती) —

उसका क्षेत्र अलवर, गुड़गाँव भरतपुर तथा आसपास है। उत्तरी राजस्थानी का उद्गम शौरसेनी अपभ्रंश के अपभ्रंश से हुआ है।

(3) पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी, ढूंढाड़ी) —

यह जयपुर, अजमेर, किशनगढ़ आदि में बोली जाती है।

(4) दक्षिणी राजस्थानी (मालवी) —

इन्दौर, उज्जैन, देवास, रतलाम, भोपाल, होशंगाबाद में तथा आसपास इसका क्षेत्र है।

---

पहाड़ी हिन्दी -

पहाड़ी भागों में बोलियों के कारण यह नाम पड़ा है। इसे बोलने वालों की संख्या 21 लाख से अधिक है। 'पहाड़ी' हिमाचल प्रदेश में गढ़वाल से उत्तर-पश्चिम से लेकर नेपाल के पूर्वी भाग तक फैली हुई है।

पहाड़ी बोलियों का मूलाधार- डा. सुनीति कुमार चटर्जी पैशाची, दरद या खस अपभ्रंश मानते हैं। पर भोलानाथ तिवारी इसका संबंध शौरसेनी अपभ्रंश से मानते हैं।

↓

यही सही भी है।

(1) **कुमायूँनी** — कुमाऊँ क्षेत्र कुमायूँ। भाषा की दृष्टि से इसके भीतर भाग अल्मोड़ा जिला, नैनीताल और पिथौरागढ़ के क्षेत्र आते हैं। इसके अतिरिक्त यह उत्तरकाशी तथा चमोली में भी विरल रूप में बोली जाती है।

(2) **गढ़वाली** — गढ़वाल को केदारखण्ड के नाम से जाना जाता था। यह पौराणिक काल से ही ऋषि-मुनियों का तपोभूमि रहा है। नाथ, सिद्ध तथा कबीर पंथी आन्दोलन ने इस भूमि को प्रभावित किया है। इसके क्षेत्र में केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, उत्तरकाशी आदि हैं।

**बिहारी हिन्दी** — बिहारी हिन्दी के अन्तर्गत तीन बोलियाँ हैं — भोजपुरी, मगही और मैथिली। इनका क्षेत्र मूल रूप से वर्तमान बिहार राज्य है, किन्तु इनकी एक बोली भोजपुरी - उत्तर-प्रदेश के पूर्वी जिलों में भी बोली जाती है। इनका जन्म मागधी अपभ्रंश से हुआ है।

(1) **मैथिली** — यह दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, मुंगेर और भागलपुर जिलों में बोली जाती है। परिष्कृत विशुद्ध रूप में यह नेपाल की तराई, चम्पारन

तथा सन्थाल परगने के कुछ भागों में बोली जाती है। इसमें - मैथिली, कैथी तथा देवनागरी - तीन लिपियों का प्रयोग मिलता है। इसे बोलनेवालों की संख्या 1 करोड़ 68 लाख है।

प्रमुख रचनाकार — विद्यापति, चंदादास, गोविन्ददास। सन्त कवियों में रामदास प्रसिद्ध हैं।

(2) भोजपुरी —

भोजपुरी की उत्पत्ति मागधी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप से मानी जाती है। भोजपुरी उत्तर में नेपाल की दक्षिणी सीमा से लेकर दक्षिण में छोटानागपुर तक और पश्चिम में पूर्वी मिर्जापुर, बनारस एवं पूर्वी फैजाबाद से लेकर रांची तक बोली जाती है। इसके अन्तर्गत बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, शाहाबाद, चम्पारण, सारन एवं छोटानागपुर के क्षेत्र सम्मिलित हैं। बोलनेवालों की संख्या — दो करोड़ चार लाख।
साहित्य में — सन्त कबीर, धरनदास, धरमदास
आधुनिक — भिखारी ठाकुर, राहुल सांकृत्यायन

(3) मगही —

इसके अन्तर्गत पटना, गया, हजारीबाग आते हैं। इसके अतिरिक्त मुंगेर और भागलपुर में भी यह बोली का प्रयोग है।